Faizane Imam Bukhari (Hindi)

फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी (رحمۃ اللہ علیہ)

सफ़हात 17

इमाम बुख़ारी رحمۃ اللہ علیہ का मज़ार मुबारक

पेशकश
मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **"फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी"**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, Email या SMS) मुत़्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • Email : hind.printing92@gmail.com

फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ

दुआए अ़त्तार : **या अल्लाह** पाक ! जो कोई 17 सफ़्हात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी"** पढ़ या सुन ले उसे ह़ज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰہِ عَلَیْہ के इश्क़े रसूल से हिस्सा अ़ता फ़रमा और उसे बे ह़िसाब बख़्श दे ।
اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो मुझ पर एक बार दुरूद भेजे, **अल्लाह** पाक उस पर दस बार दुरूद (या'नी रह़मत) नाज़िल फ़रमाएगा ।

(مسلم، ص172، حدیث:912)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद — बार बार और बे शुमार दुरूद
सर से पा तक करोर बार सलाम — और सरापा पे बे शुमार दुरूद

(ज़ौक़े ना'त, स. 123, 124)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

बीनाई लौट आई (ह़िकायत)

एक छोटे से बच्चे के अब्बूजान फ़ौत हो चुके थे, **अल्लाह** पाक का करना ऐसा हुवा कि बचपन ही में उस की आंखों (Eyes) की रोशनी चली गई । उन की नेक सीरत अम्मीजान को बहुत दुख हुवा, उन्हों ने अपने बच्चे का इलाज भी करवाया मगर उस की आंखों की रोशनी वापस न आ सकी,

अब तो बेचारी मां बहुत परेशान हुई, वोह इस सदमे से रोती रहती और **अल्लाह** पाक की बारगाह में अपने बच्चे की आंखों की रोशनी वापस आ जाने की दुआ़एं करती रहती, **अल्लाह** पाक की रह़मत जोश में आई और उस ने अपनी नेक बन्दी पर रह़्म फ़रमाया। हुवा कुछ यूं कि एक रात सोते में क़िस्मत का सितारा चमका, दिल की आंखें खुल गईं और ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे नबी ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام तशरीफ़ लाए और इर्शाद फ़रमाया: **अल्लाह** पाक ने तुम्हारी दुआ़ओं की वज्ह से तुम्हारे बेटे को दोबारा आंखों की रोशनी अ़त़ा कर दी है। सुब्ह़ उठ कर मां ने जब अपने नौ निहाल (या'नी नन्हे मुन्ने बेटे को) देखा तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ उस की आंखें (Eyes) रोशन हो चुकी थीं। (مرقاۃ، 53/1)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं येह ख़ुश नसीब बच्चा कौन था ? जी हां ! येह छोटा सा बच्चा आगे चल कर बहुत बड़ा आ़लिम व मुह़द्दिस बन कर दुन्या में ज़ाहिर हुवा, जिन्हें लोग "इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ" के नाम से जानते हैं। **अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का तआ़रुफ़

इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की विलादत (Birth) 13 शव्वाल 194 हि. जुमुआ़ के रोज़ (उज़्बकिस्तान के एक शहर) "बुख़ारा" में हुई। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का नाम मुह़म्मद और कुन्यत अबू अ़ब्दुल्लाह है। (فتح الباری، 452/1)

आप के अल्क़ाबात में से येह भी हैं : अमीरुल मुअमिनीन फ़िल ह़दीस, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, नासिरुल अह़ादीसिन्नबविय्यह, ह़िबरुल इस्लाम, सय्यिदुल फ़ुक़हाइ वल मुह़द्दिसीन, इमामुल मुस्लिमीन और शैख़ुल मुअमिनीन वग़ैरा।

(سیر اعلام النبلاء، 299/10، 293، طبقات الشافعیۃ الکبریٰ، 212/2، مقدمہ نزہۃ القاری، 106/1، الاعلام للزرکلی، 34/6)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अब्बूजान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अब्बूजान हज़रते इस्माईल बिन इब्राहीम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه करोड़ों मालिकियों के इमाम, इमामे मालिक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शागिर्द और वलिय्ये कामिल हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के सोहबत याफ़्ता थे। इन के तक़्वा व परहेज़ गारी का येह आलम था कि अपने मालो दौलत को शुबुहात (ऐसी चीज़ें जिन के हलाल या हराम होने में शुबा हो उन) से बचाते। इन्तिक़ाल शरीफ़ के वक़्त आप ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे पास जिस क़दर माल है मेरे इ़ल्म के मुताबिक़ इस में एक भी शुबे वाला दिरहम नहीं। (ارشاد الساری، 1/55)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

न मुझ को आज़्मा दुन्या का मालो ज़र अ़ता कर के   अ़ता कर अपना ग़म और चश्मे गिर्यां या रसूलल्लाह

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 340)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

नेक वालिदैन की बरकतें

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अब्बूजान के तक़्वा व परहेज़ गारी की क्या बात है, वाक़ेई शुबे वाले माल से बचना बहुत बड़ा कमाल है, मगर अफ़्सोस ! आज कल शुबे वाले माल से बचना तो दूर की बात लोग हराम कमाने से बाज़ नहीं आते, याद रखिये ! हराम माल की बड़ी नुहूसत है, हराम माल नस्लों के किरदार को तबाहो बरबाद कर सकता है, अपनी औलाद की शरीअ़तो सुन्नत के मुताबिक़ परवरिश करने के साथ साथ हलाल कमाने और हलाल खाने, खिलाने का ज़रूर ख़याल रखना चाहिये वरना याद रखिये कि हराम माल खाने, खिलाने की

नुहूसत से क़ियामत के दिन सख़्त सज़ा की सूरत हो सकती है, एक दर्दनाक रिवायत पढ़िये और ह़लाल कमाने, खाने की फ़िक्र कीजिये नीज़ अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कभी लुक़्मए ह़राम ह़ासिल किया हो तो उस से भी सच्ची पक्की तौबा कर के उस के बारे में मुफ़्तिये इस्लाम से रहनुमाई ले कर ख़लासी (या'नी छुटकारे) की सूरत बना लीजिये वरना सख़्त परेशानी हो सकती है।

बद नसीब शौहर और बाप (ह़िकायत)

रिवायत में है : मर्द से तअ़ल्लुक़ रखने वालों में पहले उस की बीवी और उस की औलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क़ियामत में) **अल्लाह** पाक के सामने खड़े हो कर अ़र्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें इस शख़्स से हमारा ह़क़ ले कर दे, क्यूं कि इस ने कभी हमें दीनी उमूर की ता'लीम नहीं दी और येह हमें "ह़राम" खिलाता था जिस का हमें इ़ल्म न था फिर उस शख़्स को "ह़राम कमाने" पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोश्त झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान के पास लाया जाएगा, फ़िरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इ़याल (या'नी घर वालों) में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : मेरी नेकियां कम हैं। तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर दूसरा आ कर कहेगा : तू ने मुझे सूद खिलाया था। और इस की नेकियों में से ले लेगा, इस त़रह़ उस के घर वाले उस की सब नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इ़याल की त़रफ़ ह़स्रतो यास (या'नी बड़ी मायूसी) से देख कर कहेगा : अब मेरी गरदन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए जो मैं ने तुम्हारे लिये किये थे। फ़िरिश्ते कहेंगे : येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां उस के घर वाले ले गए और येह उन की वज्ह से जहन्नम में चला गया।

(قرۃ العیون، ص401, नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं, स. 93)

या रब बचा ले तू मुझे नारे जहीम से　　औलाद पर भी बल्कि जहन्नम ह़राम हो

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 310)

नेक काम के साथ ह़राम का लेनदेन

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "क़ियामत के दिन कुछ लोगों को पेश किया जाएगा जिन के पास तिहामा पहाड़ के बराबर नेकियां होंगी लेकिन जब उन्हें लाया जाएगा तो **अल्लाह** पाक उन की तमाम नेकियों को बात़िल क़रार देगा और फिर उन्हें दोज़ख़ में फेंक दिया जाएगा।" अ़र्ज़ की गई : **या रसूलल्लाह !** इस की क्या वज्ह है ? इर्शाद फ़रमाया : "वोह लोग नमाज़ पढ़ते, रोज़ा रखते, ज़कात देते और ह़ज करते थे लेकिन जब उन के सामने कोई ह़राम चीज़ आती थी तो उसे ले लेते थे चुनान्चे **अल्लाह** पाक ने उन के आ'माल को बात़िल कर दिया।" (کتاب الکبائر، ص136)

ख़ौफ़नाक आवाज़

एक और ह़दीसे पाक में है : जिस ने ह़राम की कोई शै खाई उस के पेट में आग भड़काई जाएगी और वोह जिस वक़्त अपनी क़ब्र से उठेगा सारी मख़्लूक़ उस की भयानक आवाज़ से कांप उठेगी यहां तक कि **अल्लाह** पाक मख़्लूक़ के दरमियान जो फ़ैसला फ़रमाना है फ़रमा दे।

(قرۃ العیون، ص392)

जो दुकानें ख़ियानत से चमकाएंगे !　　क्या उन्हें ज़र के अम्बार काम आएंगे ?

क़हरे क़ह्हार से क्या बचा पाएंगे ?　　जी नहीं, नारे दोज़ख़ में ले जाएंगे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर वालिदैन क़ुरआनो ह़दीस पर अ़मल करने वाले, ख़ौफ़े ख़ुदा वाले हों तो औलाद भी मां बाप के फ़ैज़ान

से तक़्वा व परहेज़ गारी की मन्ज़िलें तै की हुई होगी। इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदैने करीमैन की इबादतो परहेज़ गारी का दुन्यावी नफ़्अ़ जो इन ह़ज़रात को मिला वोह अपने बेटे के "इमामुल मुह़द्दिसीन" होने की सूरत में मिला, जिन्हें रहती दुन्या तक लोग "इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه" के नाम से याद रखेंगे और इन की लिखी हुई मश्हूरे ज़माना किताब "सह़ीह़ बुख़ारी" के फ़ैज़ान से मालामाल होते रहेंगे।

बे अदब मां, बा अदब औलाद जन सकती नहीं　　मा'दिने ज़र मा'दिने फ़ौलाद बन सकती नहीं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

नेक वालिदैन की बरकतें

ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : "बेशक **अल्लाह** पाक इन्सान की नेकूकारी से उस की औलाद और औलाद, दर औलाद की इस्लाह़ फ़रमा देता है और उस की नस्ल और उस के पड़ोसियों में उस की ह़िफ़ाज़त फ़रमाता है और वोह सब **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से पर्दा और अमान में रहते हैं।" (تفسیر در منثور، 5/422)

पीरो मुर्शिद पर मेरे मां बाप पर　　हो सदा रह़मत ऐ नानाए ह़ुसैन

इमाम बुख़ारी पर करमे मुस्त़फ़ा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़दीसे पाक की मुबारक दुन्या में जो मक़ामो मर्तबा इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ह़ासिल हुवा वोह अपनी मिसाल आप है, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को लाखों अह़ादीसे मुबारका ज़बानी याद थीं। आप पर **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ख़ुसूसी फ़ज़्लो करम था। इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक मरतबा ख़्वाब देखा कि मैं **अल्लाह** के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मगस रानी कर रहा हूं (या'नी जिस्मे पाक पर बैठने वाली मख्खियां हटा रहा

हूं) ख़्वाब देख कर आप परेशान हुए कि हुज़ूर नबिय्ये पाक صَلَّی اللہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक जिस्म पर मख्खी तो बैठती न थी। उ़लमाए किराम ने ख़्वाब की येह ता'बीर इर्शाद फ़रमाई कि आप को मुबारक हो आप अह़ादीस में जो ख़ल्त़ (या'नी गुडमुड) हो गया है उसे पाको साफ़ करेंगे।

(مقدمہ فتح الباری، الفصل الاول، 9/1)

उस्ताज़ की नज़र ने कहां से कहां पहुंचा दिया (ह़िकायत)

ह़ज़रते इमाम मुह़म्मद बिन इस्माई़ल बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ के क़ाबिल तरीन शागिर्द इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ की ख़िदमते बा बरकत में ह़ाज़िर हुए और फ़िक़्ह में "किताबुस्सलाह" सीखने लगे। इमाम मुह़म्मद رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने जब इन की त़बीअ़त में इ़ल्मे ह़दीस की त़रफ़ रग़बत देखी तो इन से फ़रमाया : "तुम जाओ और इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करो।" पस जब इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने अपने उस्ताज़ का मश्वरा क़बूल किया और इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करना शुरूअ़ किया तो देखने वालों ने देखा कि आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ तमाम अइम्मए ह़दीस से आगे बढ़ गए। (राहे इ़ल्म, स. 36, تعلیم المتعلم، ص52)

40 साल तक सूखी रोटी खाते रहे (ह़िकायत)

ऐ आ़शिक़ाने इमाम बुख़ारी ! इमाम बुख़ारी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने त़लबे इ़ल्म के दौरान बसा अवक़ात सूखी घास खा कर भी वक़्त गुज़ारा, आप एक दिन में आ़म त़ौर पर सिर्फ़ दो या तीन बादाम खाया करते थे। एक मरतबा बीमार हो गए तो डॉक्टर्ज़ ने बताया कि सूखी रोटी खा खा कर इन की मुबारक आंतें सूख चुकी हैं, उस वक़्त आप ने इर्शाद फ़रमाया : 40 साल (Forty Years) से मैं ख़ुश्क रोटी खा रहा हूं और इस अ़र्से में सालन को बिल्कुल भी हाथ नहीं लगाया। (تذکرۃ المحدثین، ص183 بتغیر)

बा कमाल क़ुव्वते ह़ाफ़िज़ा (ह़िकायत)

ह़ज़रते मुह़म्मद बिन अबी ह़ातिम फ़रमाते हैं : मैं ने ह़ाशिद बिन इस्माईल और एक दूसरे बुज़ुर्ग से सुना वोह दोनों बयान करते हैं कि इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه छोटी उ़म्र में हमारे साथ इ़ल्मे ह़दीस ह़ासिल करने के लिये बसरा के उ़लमाए किराम की ख़िदमत में ह़ाज़िर होते थे, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के इ़लावा हम तमाम साथी अह़ादीस को मह़फ़ूज़ करने के लिये तह़रीर कर लेते थे, सोलह दिन (Sixteen Days) गुज़र जाने के बा'द एक दिन हम ने इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को डांटा कि आप ने अह़ादीस मह़फ़ूज़ न कर के इतने दिनों की मेह़नत ज़ाएअ़ कर दी। येह सुन कर इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने हम से इर्शाद फ़रमाया : अच्छा तुम अपने लिखे हुए सफ़ह़ात ले आओ, चुनान्चे हम अपने अपने सफ़ह़ात ले आए, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने अह़ादीसे मुबारका ज़बानी सुनानी शुरूअ़ कर दीं, यहां तक कि उन्हों ने पन्दरह हज़ार (15000) से ज़ियादा अह़ादीस ज़बानी बयान कर दीं, जिन्हें सुन कर हमें यूं गुमान होता था कि गोया हमें येह रिवायात इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ही लिखवाई हैं। (ارشاد الساری، 1/59 مفہوماً)

70 हज़ार ह़दीसें याद (ह़िकायत)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه जिस किताब को एक नज़र देख लेते थे वोह उन्हें ह़िफ़्ज़ हो जाती थी। तह़सीले इ़ल्म के इब्तिदाई दौर में उन्हें 70 हज़ार अह़ादीस ज़बानी याद थीं और बा'द में जा कर येह ता'दाद तीन लाख तक पहुंच गई, एक मरतबा ह़ज़रते सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की बारगाह में ह़ाज़िर हुए तो ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने ह़ज़रत सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से फ़रमाया : अगर आप कुछ देर

पहले आ जाते तो मैं आप को वोह बच्चा दिखाता जो 70 हज़ार ह़दीसों का ह़ाफ़िज़ है। येह हैरत अंगेज़ बात सुन कर ह़ज़रते सुलैमान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के दिल में इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से मुलाक़ात का शौक़ पैदा हुवा, चुनान्चे ह़ज़रते मुह़म्मद बिन सलाम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की बारगाह से फ़ारिग़ होने के बा'द ह़ज़रते सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه को तलाश करना शुरूअ़ कर दिया, जब (इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से) मुलाक़ात हुई तो ह़ज़रते सुलैमान बिन मुजाहिद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने इर्शाद फ़रमाया : क्या 70 हज़ार अह़ादीस के ह़ाफ़िज़ आप ही हैं ? येह सुन कर इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : जी हां ! मैं ही वोह ह़ाफ़िज़ हूं, बल्कि मुझे इस से भी ज़ियादा अह़ादीस याद हैं और जिन सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان और ताबिईन से मैं ह़दीस रिवायत करता हूं उन में से अक्सर की तारीख़े पैदाइश, रिहाइश और तारीख़े इन्तिक़ाल को भी मैं जानता हूं। (ارشاد الساری، 59/1)

ह़ाफ़िज़े की मज़बूती का एक राज़

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से पूछा गया : क्या ह़ाफ़िज़े को मज़बूत करने की भी कोई दवा है ? आप ने फ़रमाया : दवा का तो मुझे मा'लूम नहीं, अलबत्ता मैं ने इन्तिहाई तवज्जोह और इस्तिक़ामत के साथ मुत़ालआ़ करने को कुव्वते ह़ाफ़िज़ा के लिये बड़ा फ़ाएदे मन्द पाया है। (فتح الباری، 460/1)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की ह़दीस दानी

मुह़म्मद बिन इस्ह़ाक़ बिन ख़ुज़ैमा رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने आस्मान के नीचे मुह़म्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه से बढ़ कर ह़दीस का कोई आ़लिम और ह़ाफ़िज़ नहीं देखा यहां तक कि कहा जाता था कि जिस ह़दीस को "मुह़म्मद बिन इस्माईल" नहीं जानते वोह ह़दीस ही नहीं है।

बुख़ारी शरीफ़ कैसे लिखी ?

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : मैं ने जब भी अपनी किताब (सहीह़ बुख़ारी) में कोई ह़दीस लिखने का इरादा किया तो इस से पहले गुस्ल किया और दो रक्अ़त नमाज़ अदा की। मैं ने इस किताब में मौजूद ह़दीसों को छे लाख ह़दीसों में से मुन्तख़ब किया, सोलह साल के अ़र्से में इस किताब को लिखा और येह किताब मेरे और **अल्लाह** करीम के दरमियान हुज्जत (या'नी दलील) है। (المستطرف،40/1)

बुख़ारी शरीफ़ की मक़्बूलिय्यत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! यूं तो इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने कई किताबें लिखीं, लेकिन जो मक़्बूलिय्यतो शोहरत "बुख़ारी शरीफ़" को मिली इस क़दर किसी और किताब को ह़ासिल न हो सकी, इमाम अबू ज़ैद मर्वज़ी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं एक मरतबा मक्कए पाक में मक़ामे इब्राहीम और ह़जरे अस्वद के दरमियान सो रहा था कि ख़्वाब में **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे और आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ अबू ज़ैद ! हमारी किताब का दर्स क्यूं नहीं देते ? मैं ने अ़र्ज़ किया : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मेरी जान आप पर कुरबान ! आप की किताब कौन सी है ? हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : मुह़म्मद बिन इस्माईल (या'नी इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه) की किताब "बुख़ारी शरीफ़"। (بستان المحدثین، ص275،274 ملتقطا)

बुख़ारी शरीफ़ की शानो अ़ज़मत

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! बुख़ारी शरीफ़ के बारे में कहा जाता है : "اَصَحُّ الْكُتُبِ بَعْدَ كِتَابِ اللهِ الصَّحِيْحُ الْبُخَارِىْ" या'नी कुरआने करीम के बा'द

सब से दुरुस्त किताब "सहीह़ बुख़ारी" है। इस किताब का पूरा नाम येह है :
اَلْجَامِعُ الْمُسْنَدُالصَّحِيْحُ الْمُخْتَصَرُ مِنْ اُمُوْرِ رَسُوْلِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ وَسُنَنِهٖ وَاَيَّامِهٖ۔
ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ली क़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बुज़ुर्गों ने लिखा है : अगर किसी मुश्किल में "सह़ीह़ बुख़ारी" को पढ़ा जाए तो वोह मुश्किल दूर हो जाती है और येह किताब जिस कश्ती में हो वोह डूबती नहीं है, ख़ुश्क साली (या'नी बारिश न होने के दिनों में) इस को पढ़ा जाए तो बारिश हो जाती है। ह़ज़रते इमाम असीलुद्दीन رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने अपनी और दूसरों की मुश्किलात व परेशानियों के लिये "सह़ीह़ बुख़ारी" का 120 बार ख़त्म किया पस सारी मुरादें और ज़रूरतें पूरी हुईं, येह सारी बरकतें सरवरे काएनात صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की हैं। (مرقاة،54/1) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुसीबतों में ख़त्मे बुख़ारी किया जाता है, जिस की बरकत और **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से मुसीबतें टल जाती हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 1/11 मफ़्हूमन)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की आ़दाते मुबारका

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रात दिन एक कर के अपने मक़्सद को पूरा करने के जज़्बे से ही काम्याबी व तरक़्क़ी ह़ासिल हुवा करती है, फ़ुज़ूलिय्यात में दिन ज़ाएअ़ करने और रातों को ग़फ़्लत में सोने वाले काम्याबी की सीढ़ी पर नहीं चढ़ा करते, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ऐ़शो इ़शरत से बहुत दूर रहते, शुबुहात से बचना अब्बूजान से विरासत में मिला था, ह़ुक़ूक़ुल इ़बाद की पासदारी में भी अपनी मिसाल आप थे। इ़श्क़े रसूल की कैफ़िय्यत येह थी कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मूए मुबारक (या'नी मुबारक बाल शरीफ़) अपने पास रखते। आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की ग़िज़ा बहुत कम थी। अपनी निय्यत की ख़ूब ह़िफ़ाज़त फ़रमाते।

आप رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه का ज़ौक़े इ़बादत भी बे मिसाल था, सारी रात जाग कर इ़बादत फ़रमाते, बहुत ज़ियादा नवाफ़िल अदा फ़रमाते, नफ़्ली रोज़े, रोज़ाना आधी रात को उठ कर 10 पारों की तिलावत, माहे रमज़ान में रोज़ाना एक ख़त्मे कुरआन, तरावीह़ में ख़त्मे कुरआन आप के मा'मूलात में शामिल था। (سیر اعلام النبلاء، 10/303، تہذیب الاسماء واللغات، 1/93، طبقات الشافعیہ الکبری، 2/224)

इमाम बुख़ारी का रोज़गार

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه काश्तकार और ताजिर थे, आप को अब्बूजान की विरासत में बहुत सा माल मिला जिसे मुज़ारबत के त़ौर पर दिया करते थे। (مصابیح الجامع للدمامینی، 5/49، فتح الباری، 1/454) एक मरतबा आप ने फ़रमाया : मुझे हर माह 500 दिरहम आमदनी होती थी और मैं वोह सब की सब इ़ल्म की त़लब में ख़र्च कर देता था।

(سیر اعلام النبلاء، 10/309)

शह्द की मख्खी ने 17 डंक मारे (ह़िकायत)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه एक दिन नमाज़ पढ़ रहे थे, शह्द की मख्खी ने आप को 17 जगह डंक मारे, नमाज़ पूरी करने के बा'द फ़रमाया : ज़रा देखो तो येह क्या चीज़ है जो नमाज़ में मुझे तक्लीफ़ पहुंचा रही थी, शागिर्दों ने देखा तो आप की पीठ मुबारक सतरह (17) जगह से सूजी हुई थी। इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللّٰهِ عَلَيْه ने शह्द की मख्खी के 17 डंक मारने के बा वुजूद नमाज़ न तोड़ने के मुतअ़ल्लिक़ बताया कि मैं एक आयत की तिलावत कर रहा था और मेरी येह ख़्वाहिश थी कि मैं येह आयत पूरी कर लूं। (ہدی الساری مقدمہ فتح الباری ص455ملتقطا)

ऐ आशिक़ाने नमाज़ ! देखा आप ने नमाज़ में खुशूअ़ का अन्दाज़ ! **अल्लाह** पाक इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के सदक़े हमें भी अपनी इबादत और तिलावते कुरआने करीम की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए ।

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा — गुनाहों से हर दम बचा या इलाही

इबादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी — करम हो करम या ख़ुदा या इलाही

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 105)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

मस्जिद का अदब

हदीसों की मश्हूर किताब "सहीह बुख़ारी" के मुअल्लिफ़ हज़रते इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه एक मरतबा मस्जिद में थे, एक शख़्स ने अपनी दाढ़ी से तिन्का निकाल कर मस्जिद के फ़र्श पर डाल दिया ! आप ने उठ कर वोह तिन्का अपनी आस्तीन में रख लिया जब मस्जिद से बाहर निकले तो उसे फेंक दिया । (تاریخ بغداد،2/13)

कभी ग़ीबत नहीं की

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं उम्मीद करता हूं कि **अल्लाह** पाक की बारगाह में इस हाल में हाज़िर होउंगा कि वोह मुझ से ग़ीबत का हिसाब नहीं लेगा क्यूं कि मैं ने किसी की ग़ीबत नहीं की ।

(تاریخ بغداد،2/13)

निय्यत बदलना पसन्द नहीं किया (हिकायत)

हज़रते बक्र बिन मुनीर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : एक मरतबा एक शख़्स ने इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के पास सामान भेजा, शाम को आप के पास कुछ ताजिर (Businessmen) आए और 5000 दिरहम के नफ़्अ़

पर वोह सामान ख़रीदना चाहा तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : आज की रात ठहर जाओ, दूसरे दिन ताजिरों का दूसरा गुरौह आया, उन्हों ने 10 हज़ार दिरहम के नफ़्अ़ से ख़रीदने की पेशकश की, इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : कल जो ताजिर आए थे, मैं ने उन को बेचने (Sale) की निय्यत कर ली है। चुनान्चे आप ने उन्हें ही सामान बेचा और इर्शाद फ़रमाया : मैं अपनी निय्यत बदलना पसन्द नहीं करता। (تاریخ بغداد، 2/12 ملتقطا)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों की भी क्या ख़ूब शान होती है दीनी मुआ़मला हो या दुन्यावी, येह ह़ज़रात किसी भी ह़ाल में **अल्लाह** पाक के ख़ौफ़ से बे ख़ौफ़ नहीं होते बल्कि हर ह़ाल में अपनी निय्यत व क़ल्ब की ह़िफ़ाज़त करते हैं, काश ! आज कल के ताजिर ह़ज़रात (BusinessMen) भी इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को फ़ॉलो करते हुए सच्चाई व अमानत दारी से कारोबार करें तो रोज़ी में ख़ैरो बरकत के साथ साथ ख़ूब अज्रो सवाब कमाएं।

सेल्ज़ मेन के लिये ख़ौफ़ की बात

इमाम मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : क़ियामत के दिन ताजिर को हर उस शख़्स के साथ खड़ा किया जाएगा जिस को उस ने कोई चीज़ बेची होगी और जितने लोगों से उस ने लेनदेन के मुआ़मलात किये होंगे उन की ता'दाद के बराबर हर एक के बारे में उस से ह़िसाब लिया जाएगा। (احیاء العلوم، 2/111)

आ़शिक़े माल इस में सोच आख़िर क्या ज़रूरत जो कमाल रखता है ?
तुझ को मिल जाएगा जो क़िस्मत में तेरी रिज़्क़े ह़लाल रख्खा है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علىٰ مُحَمَّد

असातिज़ा व शागिर्दों की ता'दाद

सरकारे आ'ला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने इन्तिक़ाल फ़रमाया (तो) नव्वे हज़ार (90,000) शागिर्द व मुहद्दिस छोड़े। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला हज़रत, स. 238)

शारेहे बुख़ारी मुफ़्ती शरीफ़ुल हक़ अमजदी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه लिखते हैं : इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के असातिज़ए किराम की ता'दाद एक हज़ार अस्सी (1080) है। (नुज़्हतुल क़ारी, 1/119)

इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की नसीहत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه अक्सर येह अश्आर पढ़ा करते :

اِغْتَنِمْ فِی الْفَرَاغِ فَضْلَ الرُّکُوْعِ　　فَعَسٰی اَنْ یَّکُوْنَ مَوْتُکَ بَغْتَةً

کَمْ صَحِیْحٍ رَأَیْتُ مِنْ غَیْرِ سَقَمٍ　　خَرَجَتْ نَفْسُهُ الصَّحِیْحَةُ فَلْتَةً

तरजमा : (1) फ़रागत के अवक़ात में रुकूअ़ व सुजूद (या'नी नफ़्ल नमाज़) को ग़नीमत जान, अ़न्क़रीब तुझे मौत आ जाएगी। (2) मैं ने कितने ऐसे तन्दुरुस्त देखे हैं जिन्हें कोई बीमारी नहीं थी और अचानक उन की रूहें परवाज़ कर गईं।

(مکاشفۃ القلوب، ص271)

मौत आ कर रहेगी तुम्हें बे गुमां　　आख़िरत की करो जल्द तय्यारियां

सूए गोरे ग़रीबां जनाज़ा चला　　मौत का देखो ए'लान करता हुवा

वोह भी मेरी तरह क़ब्र में जाएगा　　कहता है, जामे हस्ती को जिस ने पिया

ऐ ज़ईफ़ो सुनो ! पहलवानो सुनो !　　तुम ऐ बूढ़ो सुनो ! नौ जवानो सुनो !

जल्द तौबा करो मेरी मानो सुनो !　　मौत को हर घड़ी सर पे जानो सुनो !

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

महबूबे बारी के दरबार में इमाम बुख़ारी का इन्तिज़ार

हज़रते अब्दुल वाहिद तवावीसी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं ने ख़्वाब में हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के साथ एक मक़ाम पर खड़े थे। मैं ने आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में सलाम अ़र्ज़ किया, आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सलाम का जवाब अ़ता फ़रमाया। फिर मैं ने खड़े होने का सबब मा'लूम किया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया कि "मैं मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी का इन्तिज़ार कर रहा हूं।" कुछ दिन के बा'द मा'लूम हुवा कि इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की वफ़ात (Death) हो गई है। तह़क़ीक़ करने पर पता चला कि जिस रात आप का इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा था उसी रात मैं ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की थी। (سیر اعلام النبلاء، 10/319)

ऐ आशिक़ाने इमाम बुख़ारी ! फ़र्स्ट शव्वालुल मुकर्रम 256 हि. (चांदरात) को 62 साल की उ़म्र में इमाम बुख़ारी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल शरीफ़ (Death) हुवा। एक अ़र्से तक आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की क़ब्र शरीफ़ से मुश्को अ़म्बर से ज़ियादा अच्छी ख़ुश्बू आती रही। बार बार क़ब्र शरीफ़ पर मिट्टी डाली जाती मगर लोग ख़ुश्बू की वज्ह से तबर्रुक के तौर पर उठा ले जाते थे। (طبقات الشافعیہ الکبریٰ، 2/232، 233 مفہوما) आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه का मज़ार शरीफ़ समर क़न्द (उज़्बकिस्तान) के क़रीब ख़रतंग (Khartank) नामी अ़लाक़े में है। (سیر اعلام النبلاء، 10/320، 319)

मज़ारे बुख़ारी की बरकात

हज़रते अबू फ़त्ह़ समर क़न्दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : समर क़न्द में क़ह़त़ पड़ा (या'नी बारिश न होने की वज्ह से ग़िज़ा की कमी हो गई)। लोगों

ने कई बार "नमाज़े इस्तिस्क़ा" पढ़ी, दुआएं मांगीं मगर बारिश न हुई फिर एक नेक आदमी क़ाज़िये शह्र (Judge) के पास गया और उस को मश्वरा दिया कि तुम शह्र के लोगों को ले कर इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़ार शरीफ़ पर जाओ और वहां जा कर **अल्लाह** करीम से बारिश की दुआ मांगो शायद **अल्लाह** पाक तुम्हारी दुआ क़बूल कर ले । क़ाज़िये शह्र ने येह मश्वरा क़बूल कर लिया और शह्र के लोगों को ले कर इमाम बुख़ारी के मज़ार शरीफ़ पर ह़ाज़िर हुवा, लोगों ने वहां ख़ूब रो रो कर **अल्लाह** पाक से निहायत आजिज़ी व इन्किसारी से दुआ मांगी और इमाम बुख़ारी से क़बूलिय्यते दुआ के लिये सिफ़ारिश की दरख़्वास्त की । उसी वक़्त आस्मान पर बादल आ गए और सात दिन लगातार इस क़दर बारिश होती रही कि लोगों को "ख़रतंग" में ठहरना पड़ा क्यूं कि ज़ियादा बारिश की वज्ह से "समर क़न्द" पहुंचना मुश्किल हो गया । (ख़रतंग से समर क़न्द तक तीन दिन का फ़ासिला है ।) (ارشاد الساری، 67/1)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन सब पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

अल्लाहु ग़नी ! शाने वली ! राज दिलों पर — दुन्या से चले जाएं हुकूमत नहीं जाती

(वसाइले बख़्शिश (मुरम्मम), स. 383)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278

www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net

feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net